द्वितीय अध्याय

अध्याय द्वितीय
साहित्य का पुनरावलोकन

प्रस्तावना :-

सतत मानव प्रयासों से, भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान के द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर पहले किये कार्य को बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता।

अनुसंधान प्रारंभ करने की प्रथम सीढ़ी साहित्य का पुनरावलोकन है। शोध से संबंधित पूर्व जानकारी हमें अपने कार्य को नया रूप व नये आयाम देने में मददगार साबित होते है।

साहित्य पुनरावलोकन के साधन -

साहित्य का पुनः अध्ययन शोध के क्षेत्र से जुड़ने व परिणाम की ओर अग्रसर होने में मदद करता है। साहित्य पुनरावलोकन के अभाव में शोध की पुनरावृत्ति हो सकती है। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने हेतु व उद्देश्य से विचलित न होने के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए कुछ साधन इस प्रकार है :-

- जर्नलस्
- पुस्तकें
- दस्तावेज (विभिन्न शैक्षिक दस्तावेज)
- इनसाइक्लोपिडिया
- शैक्षिक सर्वे रिपोर्ट
- शोध सारांश, इत्यादि।

प्रस्तावित शोध से संबंधित साहित्य का सारांश इस अध्याय में प्रस्तुत किया जा रहा है तथा साथ ही साहित्य के स्त्रोतों का भी उल्लेख किया गया है।

सेमुएल, वेदात्यागम, (1976-77) में मद्रास में कक्षा में ' के लिए भूगोल में "मानचित्र कार्य में वृहत धारणाओं को समझ" का अध्ययन किया।

उद्देश्य :-

- मानचित्र में मापक की धारणा की समझ।
- मानचित्र में दिशा की धारणा की समझ।
- मानचित्र में रूढ़ चिह्नों की धारणा की समझ।
- मानचित्र में रंग की धारणा की समझ।
- क्षेत्र के आरेखीय प्रदर्शन की धारणा की समझ।

प्रतिदर्श :-

- इस अध्ययन में कोयम्बटूर शहर के 100 स्कूलों में 500 लड़कों एवं लड़कियों को चुना गया। इस अध्ययन में प्रश्नावली को उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया था।

निष्कर्ष :-

(1) जब धारणाओं की समझ का तुलनात्मक अध्ययन किया गया तथा सामान्यत: उनके मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(2) सभी छात्रों में क्षेत्र के आरेखीय प्रदर्शन चिह्नों तथा रंग की धारणा की समझ से कम होती हे। सभी समूहों में लड़कियों को छोड़कर मापक, दिशा, चिह्न और आरेखीय प्रदर्शन की धारणाओं में उच्च सहसंबंध पाया गया।

साधन : शोध प्रबंध (2001-02) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल।

शर्मा (1979) उदयपुर में माध्यमिक शाला स्तर पर भूगोल में मानचित्र कार्य में सामान्य त्रुटियों पर लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत किया जिसमें इन्होंने बताया कि इन त्रुटियों का मुख्य कारण मानचित्र अंकन का अभ्यास ना कराया जाना मानचित्र प्रयोग का शिक्षण में नियमित प्रयोग न होना तथा भूगोल के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अरुचि होना बताया।

साधन : शोध प्रबंध, (2001-2002), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)

भट्टाचार्य (1984) P.hd. Edu. BHU."**भूगोल शिक्षण के लिए विभिन्न मॉडल्स का प्रभाव**" उन्होंने निष्कर्ष निकाले कि

- पारम्परिक विधि और Concept Attainment Model से पढ़ाने पर कोई विश्वसनीय अन्तर नहीं पाया गया।
- Unductive teaching method और पारम्परिक तरीके से पढ़ाई गई पद्धतियों में विश्वसनीयता पाई गई।
- प्राकृतिक भूगोल में विद्यार्थियों की रूचि ज्यादा है बजाय मानव भूगोल के।

साधन : शैक्षिक अनुसंधान चतुर्थ सर्वेक्षण (1983-88).

पाटिल (1985) P.hd. edu. Shiv. **"सोलापुर जिले के ग्रामीण स्कूल में भूगोल शिक्षण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन"** उन्होंने पाया कि-

- ग्रामीण स्कूलों में भूगोल कक्ष नहीं है।
- अधिकतर शिक्षण व्याख्यान विधि या परम्परागत विधि से पढ़ाते हैं।
- समय की कमी के कारण भौगोलिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती ऐसा शिक्षक मानते हैं।

साधन : शैक्षिक अनुसंधान चतुर्थ सर्वेक्षण (1983-88)

जैनी (1987) **"गुजरात के माध्यमिक स्कूल के भूगोल शिक्षण की स्थिति।"** उन्होंने पाया कि-

- 50% स्कूलों में भूगोल शिक्षक प्रशिक्षित नहीं है।
- 50%स्कूलों में भूगोल पढ़ाने की सुविधाएं कम हैं।
- 42% भूगोल शिक्षकों ने काई Refresher कोर्स नहीं किया है।

साधन : शैक्षिक अनुसंधान चतुर्थ सर्वेक्षण (1983-88)

गुप्ता (1989) - "भौगोलिक शिक्षण साहित्य का विभिन्न उम्र के बालकों में भौगोलिक संप्रत्यय को समझने की अवधारणा।"

- कक्षा छटवीं के विद्यार्थियों के कुल 100 में से औसत 8.84 प्राप्त हुए हैं। छात्रों को 10%प्राप्त हुए जिसकी तुलना में छात्राओं 8.2% अंक प्राप्त हुए।
- कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों को कुल अंक 100 में से औसत 10.87 अंक प्राप्त हुए जिसमें छात्राओं का 9.90% तथा छात्रों को 11.82% अंक प्राप्त हुए।
- कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों को कुल अंक 100 में से औसत 3.76 प्राप्त हुए। जिसमें छात्राओं को 11.27% छात्रों को 17.26% अंक प्राप्त हुए।

इन सभी विद्यार्थियों का रीएडमिनीस्ट्रेशन तथा नैदानिक उपचार अम्बाला में एक प्रायोगिक समूह पर किया गया तो यह ज्ञात हुआ कि कक्षा छटवीं तथा आठवी के विद्यार्थियों का कार्य प्रदर्शन अच्छा नहीं है।

साधन : शैक्षिक अनुसंधान पंचम सर्वेक्षण 1988-92.

Shahi, G. 1989. "A Comparative study of Inductive and deductive programming and the treditional teaching of physical geography at the secautory stage." P.hd. Edu- Patna Univ.

Problem : The study seeks to assess the relationship between achievement in physical geography through inductive and deductive programmes and traditional method of teaching.

Objectives :-

(i) To Campare learning in physical geography through inductive and deductive programmes.

(ii) To Compare learning in physical geography through inductive programmes and traditional teaching, and

(iii) To compare learning in physical geography through deductive programmes and treditional teaching.

Methodology :- The sample consisted of 180 School final students, 60 each in the control group, in experimental group I and in experimental group II, from randomly drawn schools in Patna. The experiment developed inductive and deductive programmes in geography. Criterion test and retention test were prepared Mean, SD, analysis of variance and 't' test were applied for the analysis of data.

Major findings :-

(1) The three groups differed significantly with regard to immediate achievement.

(2) Experimental Group I, following inductive programmes, was found to be significantly better as compared to the control Group following the traditional method.

(3) Experimental Group II, following deductive programmes, was found to be significantly better than the control group.

(4) The subjects following inductive programmes performed significantly deductive programmes.

(5) The three groups differed significantly with regard to the retention scores.

(6) The subjects following inductive programmes were found to be significantly better as compared to the subjects following

the traditional method.

(7) The subjects following deductive programmes were found to the subjects following the traditional method.

(8) The subjects following inductive programmes were significantly better as compared to the subjects following deductive programmes. (KCP 0522)

Source : Fifth Survey of Educational Research 1988-92-II

सक्सेना ने (1990) में प्राथमिक स्तर के कक्षा चौथी के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास में व्यक्तित्व के तथ्यों तथा अध्यापक की अध्ययन विधियों का अध्ययन है।

- कक्षा चार के छात्रों में भौगोलिक कौशलों का विकास करना।
- कक्षा चार के छात्रों में भौगोलिक कौशल विकास पर व्यक्तित्व तथ्यों के प्रभाव का अध्ययन करना।
- कक्षा चार में भूगोल पढ़ाने वाले शिक्षकों के मत भौगोलिक कौशल विकास में उपयुक्त अध्ययन विधियों के विषय में जानना।
- कक्षा चार के लड़कों में भौगोलिक कौशल विकास व व्यक्तित्व तथ्यों का अध्ययन करना।
- कक्षा चार की लड़कियों ने भौगोलिक कौशल विकास व व्यक्तित्व तथ्यों का अध्ययन करना।

साधन : शोध प्रबंध (2001-02) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

खान, रफत (1993-94) "कक्षा 9वीं में भूगोल विषय में छात्र-छात्राओं की न्यून शैक्षिक उपलब्धि के कारण एवं उनके निदानात्मक उपाय" का

अध्ययन किया।

उद्देश्य :-

- कक्षा 9वीं में भूगोल में छात्र-छात्राओं के न्यून शैक्षिक उपलब्धि के कारणों की जानकारी प्राप्त करना ।
- त्रुटियों के कारण का पता लगाना एवं उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों को दूर करने के उपाय सुझाना इस शोध का मुख्य उद्देश्य हें

परिकल्पना :-

- शब्द, तथ्य सिद्धांत आदि की जानकारी न होने से जैसे धारी, गार्ज पहाड़ी, पर्वत आदि के अध्ययन में चित्रांकन करने में प्राय: त्रुटियां होती हैं
- कौशल तथा अन्य योग्यताओं के अभाव के कारण नदियों के उद्‌गम तथा मुहाने को अंकित न कर सकने की क्षमता, अक्षांश एव देशांतरों में भ्रम हो जाता हैं।
- व्यावहारिक भूगोल में प्राय: छात्र-छात्राएँ मानचित्र अध्ययन में त्रुटि करते हैं। मानचित्र तथा ग्लोब में न पढ़ सकना।
- भूगोल अध्ययन में सहायक सामग्री की उपलब्धता में कमी के कारण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में न्यूनता आ जाती है।
- न्यून उपलब्धता का संबंध छात्र-छात्राओं को पढ़ाई जाने वाली अध्यापन विधि से होता है।
- त्रुटियों तथा शैक्षिक उपलब्धि में न्यूनता का संबंध छात्र-छात्राओं की रूचियों से होता है।

न्यादर्श :-

- नगर की दो उ. मा. शालाओं (एक बालक व एक बालिका) कक्षा 9वीं

के 200 छात्र-छात्राएँ।

उपकरण :- प्रश्नावली -

- पूर्व परीक्षण
- पश्च-परीक्षण
- अभिमतावली (शिक्षक)
- साक्षात्कार (छात्र-छात्राओं से)

सांख्यिकी :- मध्यमान, प्रतिशत।

निष्कर्ष :-

1. माध्यमिक स्तर पर भू-आकृति विज्ञान एवं मानचित्र अध्ययन में 41. 35%त्रुटि करते हैं
2. भू-आकृति विज्ञान पृथ्वी की बाह्य शक्तियों द्वारा निर्मित भू-आकृतियाँ के ज्ञान में 43% त्रुटि।
3. घाटियाँ, झीलों, गार्ज में अंतर के ज्ञान में 49% त्रुटि।
4. भू-आकृतियों के सही ज्ञान संबंधी त्रुटि 44% है।
5. पृथ्वी के बाह्य शक्तियों के संबंधी ज्ञान संबंधी परीक्षण में 50% त्रुटि करते हैं।
6. मानचित्र अध्ययन संबंधी भू-आकृतियों के रेखांकन के ज्ञान में 30% त्रुटि करते हैं।
7. स्थिति के ज्ञान में छात्र-छात्राएँ 48% त्रुटि करते हैं।
8. मापक, मानचित्रों के स्थानों के मध्य दूरी के ज्ञान में छात्र-छात्राएँ 49.5% त्रुटि करते हैं।

साधन : शैक्षिक शोध सारांश (1994-2003), शोध प्रभाग, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

सिंह (1998) के कक्षा चार के सामाजिक विज्ञान के प्रथम अध्याय पृथ्वी और उसका पर्यावरण की सरल एवं कठिन अवधारणाओं का अध्ययन किया; इस अध्ययनन के निष्कर्ष इस प्रकार थे :-

- शासकीय शालाओं में शिक्षण की नई तकनीकी पद्धतियों शैक्षिक सामग्री तथा न्यूनतम भौतिक सुविधाओं का अभाव पाया जाता है जबकि अशासकीय शालाओं में नहीं।
- शासकीय स्कूलों में अध्यापन कार्य संबंधी सुविधाएं अशासकीय स्कूलों की अपेक्षाकृत कुछ अधिक है।
- परिवहन संसाधन संबंधी फर्नीचर साज-सज्जा संबंधी सुविधाएं शासकीय स्कूलों की अपेक्षाकृत अशासकीय स्कूलों में अधिक है।
- शासकीय शालाओं में प्रशिक्षित शिक्षकों का प्रभाव नहीं है तथा अशासकीय विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव पाया गया।
- शासकीय विद्यालय में अभिभावकों का योगदान, जनभागीदारी नगण्य तथा अशासकीय विद्यालय में पूर्ण सहयोग जनसहभागिता सक्रिय रूप से देखी गई।
- ग्रामीण शालाओं के शिक्षकों को मूल्यांकन शिक्षण की नवीन प्रविधि व दक्षताओं का ज्ञान शहरी क्षेत्र के शिक्षकों से अधिक नहीं वे अब भी परम्परागत ढंग से शिक्षण कार्य करते हैं।

साधन : शैक्षिक शोध सारांश (1994-2003), शोध प्रभाग, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

राजोरिया (1998) ने कक्षा पाँच मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण अध्ययन किया।

निष्कर्ष इस प्रकार प्राप्त हुए :-

(1) छात्र-छात्राओं के लिंगगत अवधारणात्मक कठिनाई अध्ययन में बालक

एवं बालिकाओं के मध्यम अवधारणात्मक कठिनाई में आंशिक संबंधता पाई गई। अवधारणात्मक कठिनाई में विभिन्नता अधिक पायी गई अभिभावकों के व्यवसाय के संग व छात्रों की अवधारणात्मक कठिनाई में सहसंबंध उल्लेखनीय नहीं है।

(2) अभिभावकों की शिक्षा के संगत कठिनाइयों में उच्चस्तरीय सहसंबंध है। अशिक्षित अभिभावक वर्ग के बच्चों की कठिनाइयां शिक्षित अभिभावक को के बच्चों की तुलना में अधिक है।

साधन : शैक्षिक शोध सारांश (1994-2003) शोध प्रभाग, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) ।

दुबे (2000) ने प्राइमरी शिक्षण के एक लेख में "हाईस्कूल स्तर पर भूगोल शिक्षण में अनुदेशन उद्देश्यों के प्रस्तुतीकरण का प्रभाव" देखा गया।

निष्कर्ष :-

- प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह के छात्रों की उपलब्धि समान स्तर की है।
- पूर्व परीक्षण में छात्रों का पूर्व-ज्ञान बहुत ही अल्प था।
- छात्रों की उपलब्धि पर अनुदेशन उद्देश्यों के "प्रादेशिक और नियंत्रित समूहों के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया को अस्वीकार किया गया।"
- परम्परागत शिक्षण विधि से छात्र नवीन शिक्षण की अपेक्षा कम सीखते हैं और अनुदेशन उद्देश्यों के प्रस्तुत कर दिए जाने पर शिक्षण अधिक प्रभावी व रोचक हो जाते हैं

साधन : प्राइमरी शिक्षण जनवरी (2000) पृष्ठ क्रमांक 35

भट्टाचार्य जी.सी. (2001) "प्राथमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण और शैक्षिक क्रीडन की उपादेयता" प्राइमरी शिक्षण जनवरी 2001 (पृ.सं. 32-34).

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण नई दिल्ली : उपादेयता यह पाई कि अधिगमकर्ता केन्द्रित प्रणाली होने के कारण तथा क्रिया के माध्यम से सीखने पर बल देने के कारण यह प्रणाली बच्चों के लिए अधिक आकर्षक और मनोवैज्ञानिक पायी गई। प्रयास करते हुए सीखना इस प्रणाली के माध्यम से संभव हो पाता है जहां मानचित्र पर शब्द चित्र विशेष प्रभावी नहीं धन पाता है। वहाँ शैक्षिक क्रीडन भूगोल शिक्षण के क्षेत्र में पर्याप्त सहायक सिद्ध होता है।

- भौगोलिक स्थान तथा संकल्पनाओं के नामाधारित क्रीडन;
- त्यौहार, परम्परा रीति-रिवाज प्रदर्शन संबंधी क्रीडन;
- विश्व के विभिन्न क्षेत्र तथा देशों के निवासियों की वेशभूषा तथा व्यवहार संबंधी क्रीडन;
- विभिन्न धार्मिक तथा सामाजिक क्रियाओं से संबंधित व्यवहारिक क्रीडन आदि।

साधन : प्राइमरी शिक्षण जनवरी (2001) पृष्ठ क्र. 32

दुबे, अनीता (2002-2003) "हाई - स्कूल स्तर पर भूगोल में मानचित्र अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनके निदानात्मक उपाय".

उद्देश्य :-

(1) छात्रों में भूगोल अध्ययन के प्रति रुचि का अध्ययन करना।

(2) भूगोल विषय के मानचित्र अध्ययन में छात्रों को होने वाली कठिनाइयों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।

(3) प्रश्नपत्रों में मानचित्र संबंधी समस्याओं प्रश्नों के उचित मानदण्डों का निर्धारण करना तथा वर्तमान प्रश्न-पत्रों में इस कौशल के मूल्यांकन की स्थिति ज्ञान करना।

(4) मानचित्र उपयोग की सही जानकारी छात्र-छात्राओं को प्रदान करना।

(5) मानचित्र अध्ययन में होने वाली त्रुटियों के कारण की सही जानकारी मालूम करना।

(6) त्रुटियों को दूर करने हेतु उपाय ढूंढ़ना।

परिकल्पना :-

(1) शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में भूगोल के मानचित्र अध्ययन पर आधारित पूर्व-परीक्षा एवं पश्चात् परीक्षणों में काई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

(2) ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में भूगोल के मानचित्र अध्ययन पर आधारित पूर्व-परीक्षण एवं पश्चात् परीक्षणों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

(3) शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में भूगोल के मानचित्र अध्ययन की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

(5) ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं के मानचित्र अध्ययन की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

(5) छात्र-छात्राओं में मानचित्र की सहायता से भूगोल के अध्ययन अध्यापन के पश्चात् उनकी उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

(6) शहरी एवं ग्रामीण छात्र-छात्राओं में मानचित्र अध्ययन रूची में अंतर देखा जायेगा।

न्यादर्श :- शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं तथा ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया। ग्रामीण क्षेत्रों से दो शालाओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया।

उपकरण :-

(1) प्रश्नावली पूर्व-परीक्षण : स्वनिर्मित

(2) प्रश्नावली पश्चात् परीक्षण : स्वनिर्मित

(3) छात्र-छात्राओं से रूचि संबंधी जानकारी हेतु प्रश्नावली : स्वनिर्मित

प्रयुक्त सांख्यिकीय :- दण्डारेख एवं प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष :-

(1) शहरी क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में भूगोल के मानचित्र अध्ययन पर आधारित पूर्व एवं पश्च-परीक्षणों में किसी प्रकार का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(2) पूर्व एवं पश्चात् परीक्षणों ग्रामीण एवं शहरी की तुलना ही परीक्षण से करने पर दोनों में कोई सार्थक अंतर नहीं देखा गया।

साधन : शैक्षिक शोध सारांश (1994-2003) शोध प्रभाग, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

उपरोक्त शोध पुनरावलोकन के बाद अपने शोध से संबंधित शोध के विषय में वर्तमान स्थिति की जानकारी मिलती है तथा भूगोल शिक्षण की विधि पर शोध कार्य करने हेतु धरातल प्राप्त होता है।